अध्याय 23

1	प्रार्थना

समूह का अगुवाः प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	आराधना (20 मिनट) (परमेश्वर की विशेषताएं) परमेश्वर अनुग्रहकारी है।

मनन ।

परमेश्वर अनुग्रहकारी है पर आधारित शिक्षा को पढ़ें या सिखाएं।

1. फरीसियों की परम्परा।

पढ़ें। मरकुस 7:1–23। फरीसी कटटर 'धार्मिक' प्रवृति के थे। वे दिन में तीन बार प्रार्थना किया करते थे, सप्ताह में दो दिन उपवास रखा करते थे, वे अपनी छोटी से छोटी कमाई या सम्पत्ति का दसवां अशं दिया करते थे तथा अपने ही बनाये हुए 613 नियमों, कानूनों, व्यवस्थाओं को मानने की पूरी कोशिश किया करते थे। फरीसी बहुत धार्मिक थे, परन्तु वे स्वतन्त्र नहीं थे। वे पाप के गुलाम (यूहन्ना 8:34) तथा अपने ही बनाये हुए नियमों के गुलाम थे(यशायाह 29:13)।

2. कुछ आधुनिक मसीहियों की परम्पराएं।

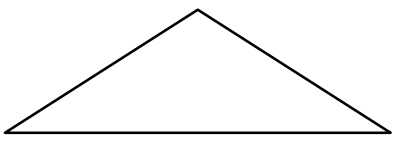
पढ़ें। मरकुस 7:7 " वे व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं "। इसी प्रकार से कुछ कलीसिया चाहती हैं कि उनके सदस्य हर दिन सभा में मौजूद रहा करें, वे चाहते हैं कि वे प्रभु के दिन दो सभाओं में हिस्सा लें, वे किसी खास तरीके से अराधना करने तथा बपतिस्मा देने की मांग करते हैं, वे कलीसिया के अन्दर विशेष प्रकार की पौशाक पहनने पर ज़ोर देतें हैं, वे चाहते हैं कि लोग अपनी आमदनी का निश्चित अंश कलीसिया में दान दें, वे मांग करते हैं कि कलीसिया के सदस्य हर बात में पासबान व पुरनियों की बात को मानें, वे चाहते हैं कि सदस्य कुछ ऐसे सिद्धान्तों पर विश्वास करें जो स्पष्ट तौर पर बाइबल पर आधारित नहीं हैं,वे चाहते हैं सदस्य परमेश्वर के साथ प्रतिदिन व्यक्तिगत समय व्यतीत किया करें।

यद्यपि इन सभी मागों की शिक्षा बाइबल में नहीं दी गयी है, फिर भी कुछ कलीसियाएं अपने सदस्यों के लिए नये नये नियमों और व्यवस्थाओं को निर्धारित करने में लगी हैं, जो उन सदस्यों को ''मैं परमेश्वर के अनुग्रह में जीवित रहना चाहता हूँ'' से ''मुझे मनुष्यों द्वारा बनाये गये नियमों के अनुसार चलना ही पड़ेगा'' की ओर ले जाते हैं।

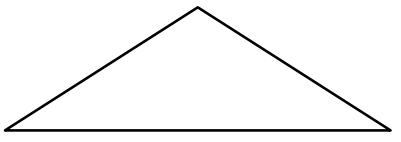
3. व्यवस्था के अधीन या अनुग्रह के अधीन होना।

पढ़ें यूहन्ना 1:16–17; रोमियों 5:12,17–18; 6:14। मसीही 'व्यवस्था के अधीन नहीं वरन अनुग्रह के अधीन हैं''।

- **कानूनी तौर से व्यवस्था के अधीन होना।**

आदम  सारे लोग जन्म लेने के द्वारा आदम से जुड़े होने के कारण व्यवस्था के अधीन, तथा पाप व मृत्यु के गुलाम हैं।	परमेश्वर पवित्र व धार्मिक होने के कारण चाहते हैं कि उनके द्वारा ठहराये गये सारे नैतिक नियमों को पालन किया जाए और जितने लोग उसके बनाये नियमों को उल्लंघन करे उसे ज़रूर दण्ड दिया जाए। सारे लोग प्राकृतिक रूप में कानूनी तौर पर 'व्यवस्था के अधीन' हैं। और सब लोगों के पाप करने के कारण (रोमियों 3:23) सभी लोग दण्ड पाने के हकदार है (गलातियों 3:10; याकूब 2:10)

- **कानूनी तौर पर अनुग्रह के अधीन होना।**

मसीह  सारे लोग विश्वास के द्वारा मसीह से जुड़े होने के कारण पूरी तरह धर्मी ठहराए गये हैं, और अनुग्रह के अधीन हैं।	लेकिन परमेश्वर के प्रेमी परमेश्वर होने के कारण, उसके प्रेम ने हर एक उस जन के पापों का प्रायश्चित कर लिया है जिसने मसीह पर विश्वास किया(रोमियो 3:24–25)। यीशु मसीह ने हमारे बदले परमेश्वर की व्यवस्था की मांग को पूरा कर दिया है(2 कुरिन्थियों 5:21)। जितने लोग यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, वे 'व्यवस्था के अधीन नहीं', लेकिन 'अनुग्रह के अधीन' हैं

मसीहियों को उनके पाप के साथ संधर्ष में उत्साहित करने के लिए प्रेरित पौलुस उन्हें सुनिश्चित करता है कि वे अपने *भीतर या बाहर* अब पाप की प्रभुता के अधीन नहीं हैं। वे परमेश्वर की धार्मिक मांग के तहत अब व्यवस्था के अधीन नहीं रहते हैं, बल्कि परमेश्वर के वरदान स्वरूप उसके अनुग्रह में रहते हैं। जो कोई आज भी "व्यवस्था के अधीन" जीवन व्यतीत करता है और जिसने अभी तक क्षमा प्राप्त नहीं की है, जो धर्मी नहीं ठहराया गया है या उसका परमेश्वर से मेल मिलाप नहीं हुआ है, वह कभी शुद्ध नहीं हो सकता है! लेकिन जो कोई "अनुग्रह के अधीन'' रहता है, जिसे क्षमा प्राप्त हो गयी है, जिसका धर्मी ठहरकर परमेश्वर के साथ मेल मिलाप हो चुका है, **वह पाप में नहीं रह सकता, नहीं रहना चाहता और न रहेगा**! इस संसार में परिशुद्ध व नया जीवन व्यतीत करने के लिए, हर व्यक्ति को यीशु मसीह में प्राप्त परमेश्वर के अनुग्रह की आवश्यकता होती है।

- **भावनात्मक रीति से व्यवस्था के अधीन होना।**

जब भी कभी कोई मसीही या मसीही कलीसिया मनुष्यों के बनाये हुए नियमों को जीवन को आधार बना देते हैं, तो वे एक आज़ाद मसीही को पुनः गुलामी की ओर धकेलते हैं। कलीसिया के द्वारा बनाये गये सारे नियम विश्वासी को एक बार फिर आत्मिक रूप में 'व्यवस्था के अधीन' बना देते हैं। आत्मिक तौर पर ''व्यवस्था के अधीन' होने का अर्थ है कि मसीही महसूस करता है कि 'उसे कुछ निश्चित मांगों को पूरा करना है'' या फिर ''उसे इस दायित्व को पूरा करना ही है''। मनुष्य के द्वारा बनाये गये ये नियम, व्यवस्थाएं उपकार, मज़बूरी और कर्तव्य को दर्शाते हैं जिसका अर्थ है कि मसीही को अपनी इच्छा के हिसाब से जीवन जीने का अधिकार नहीं है! वरन उस कलीसिया के लोग नियम निर्धारित करते हैं कि उसे उस कलीसिया में ग्रहण योग्य ठहरने के लिए किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना होगा।जब वह व्यक्ति मनुष्यों के बनाये नियमों, मांगों तथा व्यवस्थाओं का सफलता पूर्वक पालन नहीं कर पाता, तो इस मण्डली का अगुवा व सदस्य मिलकर उस पर ''अनाज्ञाकारी मसीही', ' गैरआत्मिक मसीही '' तथा '' एक बहुत बुरा आदमी'' होने का आरोप लगाते हैं।

जब कभी वह व्यक्ति मानवीय नियमों, मांगों व व्यवस्था का उल्लंधन करता है तो, वे लोग इस मसीही को एहसास दिलाते हैं कि अब परमेश्वर व दूसरे मसीही गण उस से प्रेम नहीं करते! अतः इस दोष भावना, दण्ड व बदनामी से बचने के लिए व्यक्ति मनुष्यों के बनाये हुए नियमों व व्यवस्थाओं का प्रबलता से पालन करता है। जब वह ''व्यवस्था के अधीन'' जीवन बिताता है तो वह भावनात्मक तौर पर केवल यह सोचता है कि नियमों को बनाने वाले सदस्यों व अगुवों की नज़र में **वह कौन है**! इस तरीके से ये लोग न केवल मनुष्यों द्वारा बनाये गये नियमों के बल्कि उन नियमों को बनाने वाले लोगों के भी गुलाम बन जाते हैं। बाइबल हमें आगाह करती है कि यदि हम मनुष्यों को प्रसन्न करते हैं तो हम मसीह के सेवक नहीं हो सकते (गलातियों 1:10)।

- **भावनात्मक रीति से अनुग्रह के अधीन होना।**

कानूनी रूप में मसीह पर विश्वास करने वाला विश्वासी अब परमेश्वर की दोष लगाने वाली व्यवस्था के अधीन नहीं है। जब परमेश्वर उसकी ओर देखते हैं तो केवल यीशु मसीह की धार्मिकता ही नज़र आती है(2कुरिन्थियों 5:21)। कानूनी

तौर पर मसीही लोग परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन नहीं वरन उसके अनुग्रह के अधीन हैं। इसके अलावा *भावनात्मक व व्यवहारित रीति से* मसीह में विश्वासी मनुष्यों के बनाये गये उन नियमों के अधीन नहीं है जो उन पर आरोप लगाती या उन्हें दोषी और बुरा महसूस करने पर मज़बूर करती है। आत्मिक तौर पर मसीहियों को मनुष्यों के द्वारा निर्धारित किये गये किसी नियम के तहत जीवन व्यतीत करने की कोई ज़रूरत नहीं है, वह परमेश्वर के अनुग्रह के अधीन जी सकता है। यादि उससे कोई गलती हो भी जाती है तो उसे ऐसा महसूस करने की कोई ज़रूरत नहीं है कि वह परमेश्वर के प्रेम या उसके भाई बहनों के प्रेम को खो चुका है।

मसीह पर विश्वास करने वाले लोगों के पापों का परिणाम कभी भी परमेश्वर की ओर से दण्ड,दोष या अस्वीकृति नहीं है, लेकिन वह व्यक्ति *परमेश्वर की उपस्थिति से वंचित हो जाता है*! अतः जब कभी कोई मसीही व्यक्ति कोई पाप करता है तो,उसके पास तुरन्त परमेश्वर के अनुग्रह में पुनः वापस आने का मौका खुला होता है, जिसका मतलब परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को बहाल कर लेना है। एक मसीही हमेशा यह चुनाव करने के लिए आज़ाद होता है कि वह मसीही जीवन जिये या नहीं, वह प्रेम करे या न करे, कि वह पूरी तरह से दोष भावना, दण्ड, भय और बुराई से मुक्त होना चाहता है या दोष भावना, दण्ड, भय या बुराई का गुलाम होना चाहता है।

जब वह आत्मिक रीति से 'अनुग्रह के अधीन' जीवन व्यतीत करता है, तो उसका सारा ध्यान इस बात पर केन्द्रित रहता है कि **उसने परमेश्वर व दूसरों के विरूद्ध क्या किया है।** उसे तुरन्त परमेश्वर की ओर फिर कर अपने प्रेम रहित व्यवहार का अंगीकार करके माफी मांगनी चाहिए। और फिर लगातार परमेश्वर की संगति में जीवन व्यतीत करना चाहिए (1यूहन्ना 1:9)

मसीह द्वारा किये गये उद्धार के सिद्ध कामों के कारण आप वैध रूप से 'अनुग्रह के अधीन' हैं। आप अब धर्मी हैं।

और यदि आपसे कोई पाप हो जाता है तो, परमेश्वर की ओर फिरें, अपने पापों को अंगीकार करें तथा परमेश्वर की संगति में बने रहें। आप अब आत्मिक तौर पर परमेश्वर के 'अनुग्रह के अधीन' रह सकते हैं। आप शुद्ध हो चुके हैं।

<u>आराधना।</u>

परमेश्वर के अनुग्रहकारी होने के लिए उसकी विशेषताओं के साथ आराधना करें। परमेश्वर की आराधना हम पर उसकी दया, अगुग्रह और उस भलाई प्रगट करने के लिए भी करें जिसके हम योग्य नहीं थे। तीन तीन लोगों के छोटे समूहों में उसकी आराधना करें।

3	**बांटें** (20 मिनट)	**(शान्त समय)** **रोमियों 9–12**

आपने जो कुछ दिये गये बाइबल अनुच्छेद(रोमियो 9–12) से अपने शान्त समय में सीखा है उसे संक्षेप में **बाटें या (अपनी कॉपी में से पढ़ें)।**
बताने वाले व्यक्ति की बातों को ध्यान से सुनें, उसे गम्भीरता से लें और स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षा** (70 मिनट)	**(शिष्यता)** **शिष्य की विशेषताएं**

क. नये नियम में 'अनुशासन' शब्द को अर्थ

<u>1. एक शिष्य किसी गुरू या समूह के अगुवे का अनुकरणकर्ता होता है।</u>
पढ़ें मरकुस 2:18; लूका 6:17; यूहन्ना 6:60,66; 9:28।
खोजें व चर्चा करें। इस अनुच्छेद में 'शिष्यों' का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। पुराने ज़माने में धार्मिक अगुवों व विद्धानों के शिष्य हुआ करते थे। फरीसीयों के शिष्य या चेले थे। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के भी शिष्य थे। और यीशु के पास शिष्यों की एक बड़ी भीड़ थी। इन अनुच्छेदों में 'शिष्य' शब्द का अर्थ अुनकरणकर्ता,कोई जो जुड़ा हो, किसी के साथ हो, या किसी विशेष अगुवे या समूह के अगुवे का अनुयायी है। हालांकि प्रारम्भ में बहुत से लोग यीशु मसीह का अनुसरण करते थे लेकिन बाद में उन्होंने अनुसरण करना बन्द कर दिया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वे केवल यीशु मसीह द्वारा किये जाने वाले चमत्मारों में इच्छुक थे, उससे रिश्ता रखने में नहीं।

2. शिष्य एक मसीही होता है।

पढ़ें प्रेरितों 6:7; 9:1–2,19; 11:26; 14:21–22।

खोजें व चर्चा करें। इन अनुच्छेदों में 'शिष्य' शब्द को क्या अर्थ है?

ध्यान दें। मसीही कलीयिसाओं के प्रारम्भिक इतिहास में, कई बार मसीहियों को एक मार्ग पर चलने वाले लोग कहा जाता था। उन्हें ज्यादातर शिष्य या चेले कहते थे। शिष्य शब्द एक नये धार्मिक समाज को प्रस्तुत करने के लिए किया जाता था और उसका मतलब ठीक वैसा ही था जैसे मसीही शब्द का है।

निष्कर्ष। एक शिष्य विशेष गुणों को धारण करके यीशु मसीह का अनुसरण करने वाला और उसका विद्यार्थी है।

ख. शिष्य की विशेष विशेषताएं।

परिचय। एक शिष्य विशेष गुणों का धारण करके यीशु मसीह का अनुसरण करने वाला और उसका विद्यार्थी होता है।

1. यीशु का सच्चा शिष्य यीशु मसीह का अनुसरण करता है।

पढ़ें यूहन्ना 1:35–51; लूका 5:1–11;मरकुस 3:13–15

पढ़ें व चर्चा करें। यीशु का सच्चा शिष्य क्या होता है?

ध्यान दें। यीशु मसीह के आमन्त्रण पर ध्यान दें ''आओ और देखो' और 'मेरे पीछे हो लो। शिष्यता की बुलाहट वास्तव में जहां कहीं यीशु जाए 'उसके साथ होने' की थी। यीशु के सीधे व सामर्थी व्यक्तित्व तथा उसकी शक्तिशाली शिक्षाओं के प्रभाव ने लोगों पर यीशु का शिष्य होने का दबाव डाला। इन अनुच्छेदों में "शिष्य" का अर्थ ऐसा व्यक्ति होने से है जो यीशु के सारे कामों में सदा उसके साथ रहे। शिष्यता के प्रति यीशु की बुलाहट में कोई सामाजिक सीमा नहीं थी। उसके शिष्यों में पतरस, याकूब व यूहन्ना के जैसे पापी मछुवारे थे, शमौन नामक एक राजनीतिज्ञ, और तुच्छ चुंगी लेने वाला मत्ती भी था।

2. यीशु का सच्चा शिष्य यीशु मसीह से सीखता है।

पढ़ें लूका 6:40

खोजें व चर्चा करें। यीशु का सच्चा शिष्य क्या है?

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में " शिष्य "का अर्थ विद्यार्थी, अनुयायी या सीखने वाले से है।यीशु ने अपनी शिक्षाओं में कहा कि यदि कोई शिक्षक होना चाहता है तो वह पहले शिष्य या चेला बने। वह प्रशिक्षक बनने से पहले विद्यार्थी बने।

एक चेला देखने, सुनने और नकल करने के द्वारा सीखता है (यूहन्ना 13:13–15; मत्ती 4:23; 11:28–30; प्रेरितों 4:13; फिलिप्पियों 4:9–12)। वह यीशु का अनुसरण करते हुए सीखता है। वह यीशु के जीवन व सेवकाई का अवलोकन करता है। वह यीशु मसीह व प्रेरितों की शिक्षाओं व उनके उदाहरण से सीखता है।वह यीशु की शिक्षाओं का अभ्यास करने के द्वारा भी सीखता है। जिसे उसे ज्यादा से ज्यादा अनुभव प्राप्त होता है।

3. यीशु मसीह का सच्चा शिष्य व्यक्तिगत तौर पर यीशु मसीह पर विश्वास करता है।

पढ़ें यूहन्ना 3:16–21

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या होती हैं?

ध्यान दें। एक शिष्य महज यीशु नामक किसी शिक्षक का अनुसरण नहीं करता वरन वह अपने पूरे मन और हृदय से यीशु मसीह में विश्वास करता है। वह विश्वास करता है कि यीशु मसीह मानवीय रूप धारण करके इस दुनिया में लोगों के बीच में रहने के लिए आया। वह विश्वास करता है कि उसे धर्मी ठहराया गया है और उसके पास अनन्त जीवन है।

वह विश्वास करता है कि यीशु जगत की ज्योति है और वह उस ज्योति का अनुसरण करते हुए उस ज्योति में वास करता है।

4. यीशु मसीह का सच्चा शिष्य यीशु मसीह और उसकी शिक्षाओं को मानता है।

पढ़ें यूहन्ना 8:31–32।
खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?
ध्यान दें। यीशु मसीह का शिष्य जो उसका मन करे उस बात पर विश्वास नहीं करता और न ही जो उसका मन करे वह काम करता है लेकिन वह यीशु मसीह व उसकी शिक्षाओं पर विश्वास करता है। यीशु मसीह की शिक्षाओं को पालन करने में गरीबों, परेशान व दरिद्र लोगों के प्रति काम शामिल हैं।

5. यीशु मसीह का सच्चा एक सेवक होता है।

पढ़ें यूहन्ना 12:26; 13:12–17(मरकुस 13:34; 1 कुरिन्थियों 3:9)
खोजें व चर्चा करें।यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?
ध्यान दें। यीशु मसीह की बुलाहट इस धरती पर उसके काम को पूरा करने में उसका साथ देने की थी। इस धरती पर हर एक विश्वासी को पूरा करने लिए एक निर्धारित काम दिया जाता है। सेवक की एक और विशेषता यह है कि वह उन कार्यों को करना पसन्द करता है जिसे कोई कर नहीं पाता या कोई करना पसन्द नहीं करता। वह घरों के सबसे छोटे सेवक का काम भी करने को तैयार होता है जैसे, मुसाफिरों के पैर धोना।

6.यीशु मसीह का सच्चा शिष्य अपने सम्बन्धों में प्रेम प्रगट करता है।

पढ़ें यूहन्ना 13:34–35 (1 कुरिन्थियों 13:4–8)।
खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?
ध्यान दें। यह प्रेम यीशु के प्रेम के समान ही निःस्वार्थ व आत्म–बलिदान चढ़ाने वाला प्रेम होता है। प्रेम धीरजवन्त और कृपालु होता है। प्रेम नम्र, दयालु और उदार होता है। प्रेम उच्च आचरण करने वाला व संयमी होता है। प्रेम क्षमा करता तथा दूसरों की बढ़ती को देखकर प्रसन्न होता है। प्रेम लोगों पर भरोसा करता है और वह आशा रखता है कि परमेश्वर परिस्थितियों को बदल सकता है। प्रेम लोगों के प्रति भलाई करने में धैर्य रखता है और लोगों को परमेश्वर व अन्य लोगों के प्रति भला व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

7. यीशु मसीह का सच्चा चेला यीशु में बना रहता है।

पढ़ें यूहन्ना 15:5–6
खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?
ध्यान दें। यीशु मसीह में बने रहने का अर्थ है कि उस व्यक्ति ने यीशु को अपने जीवन व हृदय में ग्रहण किया है। एक सच्चा चेला यीशु मसीह व बाइबल से व्यक्तिगत रिश्ता बनाने के लिए प्रयास करता है। वह अपने सम्पूर्ण जीवन को यीशु मसीह व उसकी शिक्षाओं के प्रति समर्पित करता है। परन्तु यीशु के साथ यह सम्बन्ध दिखावटी नहीं वरन सच्चा होना चाहिए। जो दिखावे के लिए यीशु मसीह से रिश्ता रखता है उसे नरक में फेंक दिया जाएगा।

8.यीशु मसीह का सच्चा शिष्य यीशु मसीह के वचनों द्वारा नियन्त्रित व रूपान्तरित होता है।

पढ़ें यूहन्ना 15:7क
खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?
ध्यान दें। यीशु मसीह के वचन नये शिष्यों(यूहन्ना 15:3) को शुद्ध करते(धर्मी ठहराते) हैं। शिष्य का जीवन, मन, हृदय और व्यवहार यीशु के वचनों द्वारा नियन्त्रित व प्रभावित होना चाहिए, जिसके द्वारा वह लगातार बदलते हुए उत्तम बन जाता है(यूहन्ना 15:7)

9. यीशु मसीह का सच्चा शिष्य यीशु के वचनों के अनुसार प्रार्थना करता है

पढ़ें यूहन्ना 15:7ख,16 (1यूहन्ना 5:14)
खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

10. यीशु का सच्चा शिष्य बहुतायत से और बने रहने वाला फल लाता है।

पढ़ें यूहन्ना 15:8,16

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। सबसे प्रमुख शिक्षा यह है कि जब शिष्य मसीह में बना रहता है तब ही आत्मिक फल लाता है। बहुतायत से व बने रहने वाले फल को लाकर ही मसीही यह साबित करते हैं कि वे यीशु मसीह के सच्चे चेले हैं।

बाइबल में फल के अलग अलग मतलब हैं।

- सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा उत्पन्न फल नये विश्वासी होते हैं(कुलुस्सियों 1:6)
- एक सच्चे परिवर्तित विश्वासी का फल उसकी नयी जीवन शैली व उसके भले काम होते हैं (मत्ती 7:15–23;लूका 3:8–14)
- शिष्यों का र्निमाण करने से मिलने वाला फल सदैव बना रहने वाला फल है। जो परिपक्व व धीरज रखने वाले मसीही को दर्शाता है(यूहन्ना 15:16)
- मसीही जन के भीतर पवित्र आत्मा द्वारा उत्पन्न फल उसका मसीही चरित्र है (गलातियों 5:22–23)

मसीह में बने रहकर शिष्य बहुत सा फल लाते हैं। परमेश्वर द्वारा छांटे जाने से शिष्य और भी अधिक फल लाते हैं। इस छांटने में परमेश्वर द्वारा डांट, संशोधन,कठिन परिस्थितियों द्वारा अनुशासन शामिल है जिसे परमेश्वर एक विश्वासी के जीवन में आने देते हैं। नये विश्वासी को लगातार मज़बूत बनाने तथा उसकी देखभाल करने से,शिष्य बने रहने वाला फल लाते हैं, जिसका अर्थ है कि नये विश्वासी परिपक्व और विश्वास में दृढ़ बन जाते हैं।

बीज बोने वाले दृष्टान्त में यीशु ने शिक्षा दी कि उसके वचन कई विश्वासियों में 100 गुना फल लाते हैं, कुछ 60 गुना और कुछ 30 गुना ही फल लाते हैं(मत्ती 13:23)। यह इसलिए होता है कि सभी मसीही एक समान पश्चाप नहीं करते,भरोसेमन्द, विश्वासयोग्य या साहसी होत हैं, न ही सारे मसीही एक समान प्रचार करने, फल लाने या दूसरे लोगों के चेले बनाने के प्रति उत्साही नहीं होते, और न सारे मसीहियों की परिस्थितियां, लक्ष्य या आत्मिक वरदान एक जैसे होते हैं।

11. यीशु का एक सच्चा शिष्य चारित्रिक प्रशिक्षण ग्रहण करता व सीखता है।

पढ़ें लूका 6:39–42

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। इससे पहले कि परमेश्वर किसी शिष्य को दूसरों को रूपान्तरित करने के लिए इस्तेमाल करे,एक शिष्य को पहले परमेश्वर द्वारा रूपान्तरित होना सीखना चाहिए। वह दूसरों को सुधारने से पहले अपनी कमजोरियों और असफलताओं को ध्यान देता है। एक शिष्य का लक्ष्य अपने चरित्र, व्यक्तित्व व व्यवहार में मसीह के समान बनना होता है।

12. यीशु मसीह का सच्चा शिष्य कुर्बानी देने वाला व खुद का इन्कार करने वाला होता है।

पढ़ें लूका 6:23–26

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। मसीह का प्रचार करने और उसके नाम के खातिर अस्वीकृति,लज्जा, और कष्टों के द्वारा, उसके जीवन का उददेश्य केवल प्रतिदिन मसीह को महिमा देना होता है।

13.यीशु मसीह का सच्चा शिष्य संघर्ष, अस्वीकृति और कष्टों को सहने के प्रति समर्पित होने के लिए बुलाया गया है।

पढ़ें लूका 9:57–58।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। पहले प्रकार के शिष्य बिना किसी बुलाहट के यीशु का अनुसरण करना चाहते थे। वह यीशु का अनुसरण करने के लिए इतना उत्सुक थे कि शिष्य बनने के मूल्य को जोड़ना ही भूल गये। उन्होंने यीशु के पीछे बड़ी भीड़ को आते, चमत्कार और लोगों के उत्साह को देखा, और वह यीशु के साथ जुड़ना चाहते थे क्योंकि वह ही सारी गतिविधियों का केन्द्र बिन्दू था। परन्तु जैसे जैसे सुसमाचार की कहानी आगे बढ़ती है, यहूदा यीशु का इनकार कर देता है(यूहन्ना 5:18), गलील उसे बाहर निकाल देता है(यूहन्ना 6:66),गरदेनियों के लोग उससे उनके नगर को छोड़कर जाने की विनती करते हैं (मत्ती 8:34), सामरिया में उसे सिर छुपाने के लिए जगह नहीं मिलती(लूका 9:53),धरती भी उसे रख नहीं

सकती (मत्ती 27:23) और स्वर्ग ने भी उसका साथ छोड़ दिया (मत्ती 27:46)। एक सच्चे शिष्य को संघष, तिरस्कार व कष्ट सहना पड़ता है। यह ही शिष्य बनने की कीमत है (लूका 14:25–30)।

14. यीशु का सच्चा शिष्य बिना किसी शर्त आज्ञापालन के प्रति समार्पित होने के लिए बुलाया गया है।

पढ़ें लूका 9:59–60।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। दूसरे प्रकार का शिष्य अपनी शर्तों पर यीशु का अनुंसरण करना चाहता है। वह यीशु की शर्तों पर यीशु का अनुसरण करने को तैयार नहीं था।एक तरफ तो वह प्रेरितों के समान यीशु का नज़दीकी अनुयायी बनना चाहता था। दूसरी ओर वह यीशु के पीछे होने के लिए शर्त रखता है।वह पहले जाकर अपने पिता को दफनाना चाहता था, जिसकी उसी समय मौत हो गयी थी। यीशु मसीह उसे यह बात समझाना चाहते थे कि वह सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर है और उसकी बात को बिना किसी शर्त, योग्यता या आरक्षण के माना जाना चाहिए। वह उस व्यक्ति को यह समझाना चाहते थे कि परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर का परिवार हमारे अपने परिवार से अधिक महत्वपूर्ण है। याद रखें कि यीशु इस बात को खास प्रकार के शिष्यों से कह रहें हैं न की सारे लोगों से। यीशु के कहने का अर्थ यह नहीं है कि मसीहियों को अपने माता पिता की देखभाल नहीं करनी चाहिए(यूहन्ना 19:26–27) या उनके दफन का इन्तेज़ाम नहीं करना चाहिए (मत्ती26:12)। लेकिन यीशु मसीह के कहने का अर्थ है कि मसीही जन अपने माता पिता से बढ़कर यीशु मसीह को प्रेम करे। शिष्य को बिना किसी शर्त यीशु मसीह का अनुसरण करना चाहिए।

15.यीशु का सच्चा शिष्य यीशु को कभी न छोड़कर जाने का समर्पण करने के लिए बुलाया गया है।

पढ़ें लूका 9:61–62

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। तीसरे प्रकार का मसीही बिना यह जाने कि उसके परिवार, उसके दोस्तों व सांसारिक अभिलाषाओं का उसके जीवन पर कितना गहरा प्रभाव हो सकता हैं,यीशु का अनुसरण करना चाहता है। वह शायद अपने आप को अच्छी तरह से नहीं पहिचानता है। यीशु उसके हृदय में झांककर उन बातों को देख सकते थे जो उसे नज़र नहीं आ रही थी(यूहन्ना 2:25)। यीशु उसके मन व हृदय को जांच सकते थे। यीशु जानते थे कि जब उसका यह महत्वाकांक्षी शिष्य जब घर वापस जाएगा तो, वह अपने ही घर पर रहना पसन्द करेगा और यीशु के साथ नहीं आएगा। यीशु कहते हैं कि मसीही जन को यीशु का अनुसरण करने से कभी पीछे नहीं हटना चाहिए। एक सच्चे शिष्य को पीछे मुड़कर अपनी वृद्धा अवस्था के बारे में चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

16. यीशु मसीह का सच्चा शिष्य किसी भी रिश्ते से बढ़कर यीशु को प्रेम करता है।

पढ़ें लूका 14:26

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। एक शिष्य यीशु मसीह को अपने माता पिता, अपने परिवार यहां तक कि अपने आप से बढ़कर महत्व देता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीही लोगों को अपने माता पिता व परिवार को त्याग देना या भूल जाना चाहिए। बाइबल मसीहियों को उनके माता पिता की देखभाल करने, अपनी पत्नी को प्रेम करने, बच्चों की परवरिश परमेश्वर के वचनों के आधार पर तथा अपने पड़ोसियों को अपने समान प्रेम करने के लिए कहती है। यह पर इस्तेमाल किये गये 'नफरत' शब्द का अर्थ कम प्राथमिकता देना है (मत्ती 10:37)। यदि परिवार और यीशु मसीह में से किसी को चुनने का सवाल हो तो, चाहे परिवार की चाह कितनी भी प्रबल क्यों न हो, अस्वीकृत कर देनी चाहिए। शिष्य की सर्वोच्च वफादारी यीशु मसीह के प्रति होती है और उसका स्थान कोई रिश्ता छीन नहीं सकता। शिष्य बिना किसी शर्त के यीशु को अपना प्रभु व मार्गदर्शक चुनता है। इसलिए वह अपने सारे रिश्तों को यीशु मसीह के प्रति भक्ति और वफादारी के अधीन कर देता है।

17. यीशु मसीह का चेला एक समर्पित मसीही होने के नाते बलिदान, तिरस्कार,कष्टों को स्वीकार कर लेता है।

पढ़ें लूका 14:27।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। 'क्रूस उठाने'' का सही मतलब यही है।

18.यीशु मसीह का सच्चा शिष्य संसार की सारी महत्वाकांक्षाओं से ज्यादा यीशु को महत्व देता है।

पढ़ें लूका 14:33।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। एक शिष्य यीशु का अनुसरण करने के लिए कुछ भी छोडने के लिए तैयार होता है। वह धन, सफलता, कीर्ति और सामर्थ के प्रेम को उसे यीशु का शिष्य बनने में बाधा बनने नहीं देता। यदि एक तरफ धन, सफलता, कीर्ति और ताकत कमाने और दूसरी ओर यीशु का अनुसरण करने का सवाल हो तो, भौतिकवाद और दुनियावी सफलता के मोह को त्याग देना चाहिए। शिष्य सबसे बढ़कर यीशु मसीह के प्रति समर्पित है और इस समर्पण का स्थान किसी चीज़ ने नहीं लेना चाहिए।

19.यीशु मसीह का सच्चा शिष्य यीशु मसीह का एक गवाह होता है।

पढ़ें लूका 24:45–48।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। शिष्यों को विश्वासयोग्यता के साथ मनन करने या परम्पराओं को आगे बढ़ाने के लिए नहीं जाना जाता। वे तो मसीह के आज्ञाकारी गवाह थे। उनकी गिनती कभी विद्धानों या व्यवस्था के शिक्षकों में नहीं हुई थी, वरन वे उन छोटे बच्चों के बीच में थे जिन पर परमेश्वर ने अपने प्रकाशनों को प्रगट किया था(मत्ती 11:25–27)। वे वह छोटा झुण्ड थे जिन्हें परमेश्वर अपना राज्य देने के लिए प्रसन्न था(लूका 12:32; मत्ती 5:10)।

20 यीशु मसीह का सच्चा शिष्य यीशु के अपमान को सहने के लिए तैयार रहता है।

पढ़ें मत्ती 10:24–25

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। यीशु मसीह के दुश्मन कहते थे कि वह 'शैतान की शक्ति से काम करने वाला''(मत्ती 12:24–27), ' उसमे दुष्टात्मा है'(यूहन्ना 10:20) तथा वह 'मनुष्य के रूप में शैतान है'(मत्ती 10:25)। लोग यीशु के चेलों के साथ भी वैसा ही व्यवहार करेगें जैसा उन्होंने यीशु के साथ किया था। शिष्यों के साथ भी बुरा व्यवहार होगा, उनकी बातों को गलत समझा और तोड़ा मरोड़ा जाएगा।(मत्ती 5:10–12;2 तीमुथियुस 3:12)।

21. यीशु मसीह का सच्चा शिष्य परमेश्वर की राज्य के सिद्धान्तों का अपने जीवन में इस्तेमाल करता है।

पढ़ें मत्ती 13:52।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। ''राज्य के बारे में निर्देश' पाने का मतलब वास्तव में ' राज्य के मामलों में चेला बनना' था। यीशु का शिष्य 'परमेश्वर के राज्य के सम्बन्ध में' यीशु की शिक्षाओं को समझता और उसका अपने जीवन में इस्तेमाल करता है। उसे मत्ती अध्याय 5से 7 के अनुसार राज्य के जीवन को जीने के लिए, मत्ती अध्याय 13 के बताये गये दृष्टान्त के अनुसार सेवा करने के लिए, तथा मत्ती 18 व 19 में सिखाये गये स्वभाव व रिश्तों को धारण करने के लिए निर्देशित व प्रशिक्षित किया गया है। उसका भण्डार परमेश्वर के राज्य की अनन्त सच्चाईयों से भरा होता है। उसके भण्डार से वह ज्ञान की बातों को बहुतायत से बांटता है। यह सिद्धान्त न केवल पौराणिक, परखे हुए हैं, वरन इन्हें जीवन के हर क्षेत्र तथा विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में नये तरीके से इस्तेमाल भी किया जा सकता है। यीशु मसीह के शिष्य इस काल के सच्चे 'शिक्षक' हैं(मत्ती 23:34)। वे परमेश्वर के राज्य के बारे में बताने वाले तथा परमेश्वर के सर्वश्रेष्ठ नियमों को इस दुनिया में समझाने वाले हैं।

22. यीशु मसीह का सच्चा शिष्य दूसरे शिष्यों का र्निमाण करता है।

पढ़ें मत्ती 28:18–20

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के सच्चे शिष्य की विशेष विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें। वह आस पड़ोस के लोगों में और दूसरे समाज के लोगों में जाकर यीशु की आज्ञाओं को मानना सिखाने के लिए पहल करता है। प्रेरितों के काम में शिष्य की प्रथम प्रगट विशेषता ' मत को मानना' थी। पौलुस का भी यही लक्ष्य था। रोमियों 1:5 में हम पढ़ते हैं कि ''उसके द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली कि उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उसकी मानें।''और यह ही यीशु मसीह के चेलों का भी लक्ष्य बना। यीशु मसीह के शिष्यों ने सुसमाचार प्रचार किया तथा सारे जगत के लोगों को यीशु मसीह पर विश्वास करना और उनकी बातों को मानना